भ€तकाल स्वर्णयुग

भूमिका – भ€तकाल का साहित्य संवत् क्फस्त्रभ में क्स्त्र के प्रकट हुआ । साहित्य अपने पूर्ववर्ती कालों के साहित्य से निश्चय ही उत्तम है। भ€तकालीन साहित्य ने न केवल हिन्दी साहित्य में अपितु विश्व साहित्य में अपना विशेष स्थान बनाया है। इसे हिन्दी साहित्य के स्वर्ण युग की संज्ञा दी जाती है । आचार्य राम चद्र शु€ल ने यहाँ तक कहा दिए है

यदि आधुनिक युग का छोड़ दिया जाए, तो भ€त काल का ही साहित्य उत्तम है ।

आ. हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसारः–

समूचे भारतीय इतिहास में अपने ढंग का अकेला साहित्य है। इसी का नाम भ€त साहित्य है। यह एक नई दुनिया है।

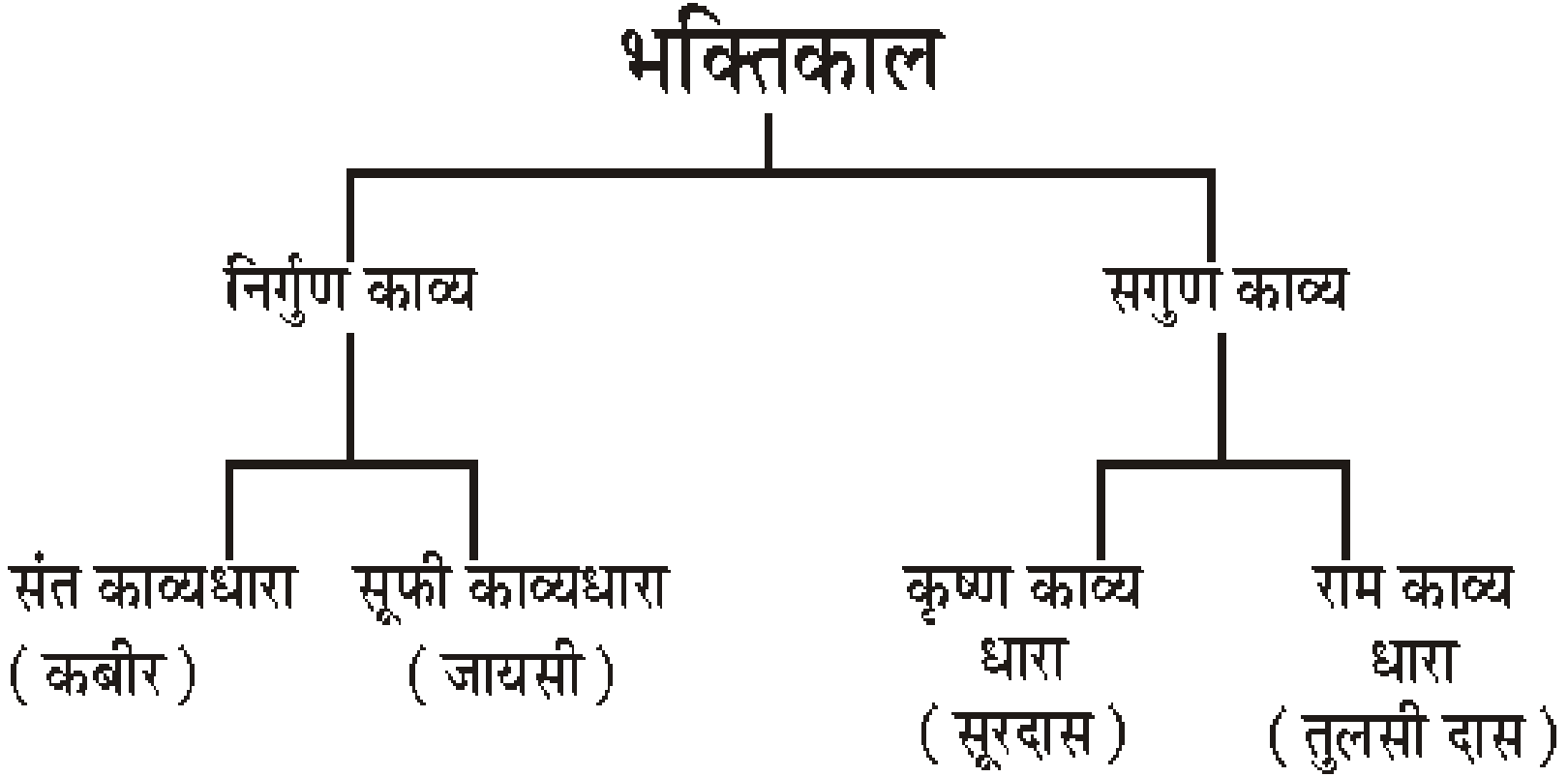
भक्तिकाल
निर्गुण काव्य
सगुण काव्य
संत काव्यधारा
(कबीर)
सूफी काव्यधारा
(जायसी)
कृष्ण काव्य
धारा
(सूरदास)
राम काव्य
धारा
(तुलसी दास)

प्रमुख कविः- कबीर दास, गुरु नानक, रैदास, दादू दयाल, सुंदरदास, मलूक दास, जायसी, उस्मान, मंझन, नूमुह□द, सूरदास , मीरा, रसखान, कुंभनदास, नंददास, तुलसीदास, केशवदास नाभादास, अग्रदास इत्यादिहै। इनमें से सर्वप्रमुख कबीर, जायसी, सूर व तुलसी दास है।

भ€तकाल हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग (विशेषताएँ):- भाव-विचार भाषा दृष्टि से उत्तम होने के कारण भ€तकाल हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग है। नि लिखित विशेषताएं इसके स्वर्णयुग होने की धारणा को स्पष्ट करती हैं।

क. भावों की स्वतंत्र अभिव्य€त:- आदिकालीन और रीतिकालीन कवियों की वाणी आश्रयदाताओं और दरबारी जनों के मनोरंजन के लिए थी । इसके विपरीत भ€तकालीन कवियों की वाणी उनके शुद्ध हृदय से निकल भावों की स्वतंत्र अभिव्य€त है ।

- **ख. सांस्कृतिक महत्वः**– इस काल के कवियों ने अपने काव्य में उस समय की संस्कृति का सुंदर वर्णन किया है। रामचरित मानस, पद्मावत में भारतीय संस्कृति का चित्रण है। मानस के बारे में कहा जाता है–

  मानस भारतीय संस्कृति का विश्वकोश है।

  डॉ. ग्रियर्सन के अनुसार

  भारत का किसान भी दूसरे देशों के नेताओं से अधिक सुसंस्कृत है। इस बात का श्रेय बिना किसी पक्षपात के तुलसी को दिया जा सकता है €योंकि आज के भारत का धर्म और संस्कृति तुलसी स□त धर्म और संस्कृति है।

- **फ. उदार और व्यापक दृष्टिकोण:-** ये कवि किसी धर्म या सप्रदाय के प्रति कट्टर नहीं थे। यद्यपि चारों शाखाओं में भ€ित का स्वरूप भिन्न-भिन्न है, तथापि कही भी अनुदारता दिखाई नहीं देती । भ€ित के क्षेत्र किसी जाप-पात को महत्व नहीं देते । इनके अनुसार:-

  हरि को भजे सो

  हरि का होय।

- **ब. आध्यात्मिकता और साहित्यिकता का मेल:-** मानस पद्मावत सूरसागर में जहाँ भ€ित का स्वर है वहाँ उच्च कोटि की साहित्यकता भी है। कहते भी है:-

  भ€ितकालीन साहित्य भ€तों के हृदय की प्यास बुझाता है, तो काव्य रसिकों को भी रसमग्न करता है।

भ. **स्वतः पूर्ण साहित्यः**– यह साहित्य लोक–परलोक को स्पर्श करता है । इन कवियों ने भक्ति के साथ–साथ जीवन की उपेक्षा नहीं की है। यह काव्य एक साथ हृदय, मन और आत्मा की प्यास बुझाता है।

- म. **लोकहित की भावना :** इस काल के कवियों ने चाहे रचनाएं अपने सुख के लिए रची, पर उनका उदेश्य लोकहित करना ही था। कबीर ने लोकहित के लिए हर बुराई का विरोध किया। हज़ारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार :–

  कबीर ने जहाँ बुराई देखी, वही अपनी जुबान की कैंची चला दी।

  तुलसी द्वारा की गई समन्वय की विराट् चेष्टा लोकहित का प्रयास है।

- **स्त्र. भगवान के उपासक कविः-** भ€तकालीन सभी कवि ईश्वर के उपासक है। उनके ईश्वर की स्वरूप निर्गुण है या सगुण।
- **त्त. जनता के प्रेरक कविः-** ये जनसामान्य के कवि थे। संत फकीर होकर सामान्य जनता को सामान्य विचारों में जन सामान्य की भाषा में अपना उपदेश संदेश व प्रदान किया।
- **-. महान् कवियों की देनः-** इस युग में अनेक महान कवि पैदा हुए, जिन्होंने साहित्य को प्रकाशित कर दिया, जिनमें तुलसी, सूरदास कबीर , जायसी, मीरा आदि हैं। ये सभी अपने अपने क्षेत्र में बली है, बलवान् और महान् हैं ।

- **क. ईश्वर के साथ सबंध स्थापना :-** सभी कवियों ने ईश्वर के साथ कोई संबंध अवश्य स्थापित किया । सगुण कवियों ने उसे स्वामी, सखा, पति के रूप में देखा व निर्गुण कवियों ने भरतार आदि कहकर पुकारा। ईश्वर के साथ माँ-बेटे का संबंध जोड़ते कबीर कहते हैं :-

हरि जननी, मैं बालक तेरा ।

- **क्क. सद्गुणों पर बल :-** इन सभी कवियों ने सदाचार, सत्संग, मन की शुद्धि हेतु की पवित्रता , लोक-कल्याण की भावना पर बल दिया , जो व्यक्ति और समाज की उन्नति साधन है।

ख. कलापक्ष

- **क्ख. जन सामान्य की भाषा:-** इन कवियों ने जनता को उपदेश देने के लिए जन की भाषा को ही चुना । सूर और तुलसी जैसे विद्वानों ने भी जन सामान्य भाषा ब्रज और अवसर को ही महत्व दिया ।

- **क्फ. भाषा का सौन्दर्यः-** भ€तकाल के कवियों की भाषा भावों के अनुसार चलन है। इनकी भाषा में सरलता, सरसता, स्वाभाविकता और प्रवाहत्मकता है। कबीर के बारे में हज़ारी प्रसाद द्विवेदी ने कहा है:-

कबीर वाणी के ड€टेटर हैं।

- **क्ष. काव्य रूपों की विविधता:-** इस काल में प्रबंध काव्य मु€त, मु€तक काव्य, गेय काव्य सू€€त काव्य, कथा-काव्य सभी के दर्शन होते हैं । प्रबंध काव्य-मानस, पद्‌मावत।

  मु€तक काव्य- कबीर व रहीम के दोहे मीरा,सूर , रसखान की पदावली इत्यादि।

क्ष. संगीतात्मकता:- भक्तिकाल का संपूर्ण काव्य संगीतमय है।

ज्ञ. विविध रसों का प्रयोग:- इस काल में सभी रसों का प्रयोग हुआ है।

- वात्सत्य रस- सूरदास में
- शृंगार रस - सूरदास में
- वीर रस - तुलसीदास में
- शान्त रस - सभी कवियों में

- **क्स्त्र. अलंकारों का स्वाभाविक प्रयोगः–** इस काव्य में लगभग सब प्रकार के अलंकारों का प्रयोग हुआ है। परन्तु इन अलंकारों का प्रयोग स्वाभाविक व अनायास रूप में हुआ है, सायास रूप में नहीं।

- **निष्कर्ष:-** अत: भक्तिकाल का साहित्य भाव व कला दोनों की प्रकार से उत्तम साहित्य है। उस युग का साहित्य दर्शन, धर्म और संस्कृति के चित्रण के कारण हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग है। ऐसे स्वर्ण युग सदियों बाद किसी भी भाषा के साहित्य में जन्म लेते हैं। आ. हज़ारी प्रसाद द्विवेदी ने सही ही कहा है :-

समूचे भारतीय इतिहास में यह अपने ढंग का अकेला साहित्य है। इसी का नाम भक्ति साहित्य है । यह एक नई दुनिया है ।

बाबू श्याम सुंदर दास के अनुसार-

जिस युग में कबीर, जायसी , सूर जैसे रससिद्ध, कवियों और महात्माओं की दिव्य वाणी उनके करण से निकल कर देश के कोने-कोने में फैली थी, उसे साहित्य के इतिहास में सामान्यत: भक्तियुग कहते हैं। निश्चय ही वह हिन्दी साहित्य का स्वर्ण-युग है।

धन्यवाद।

डॉ. ज्योति गोगिया (विभागाध्यक्ष)

स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग

हंसराज महिला महाविद्यालय,

जालन्धर ।चलभाष- -स्त्रत्क्क-क्क्त्स्त्रस्त्र

ई-मेल-jyotigogia_70@rediffmail.com